NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

महिला के आत्मनिर्भर बनने की कहानी

प्रियंका जादौन[1], सोमदत्त त्रिपाठी[2] , अरविन्द कुमार सिंह [3], यशवंत गहलोत[4]

परिचय:

कहते हैं आप जो सोच सकते हैं वो आप कर सकते हैं ऐसा ही कुछ मध्यप्रदेश के भिंड जिले के गोहद ब्लॉक के छोटे से गांव चकतुकेड़ा में देखने को मिला, दूसरे किसानो के खेतो में मजदूरी करने वाली **पूजा देवी** आत्मनिर्भर रूप से मसरूम की खेती कर न केवल खुद के घर की आय के लिए स्रोत बनाये बल्कि आज अपने जैसी कई महिलाओं को रोजगार प्रदाय कर रही है

पूजा देवी से चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि पहले मैं किसानो के खेत में जाकर मजदूरी किया करती थी और मेरे पति घर से दूर नौकरी करते थे. इस बीच कोरोना काल में लोक- डाउन के दौरान पति की नौकरी चली गई तथा मुझे भी मजदूरी मिलनी बंद हो गई, तो फिर आय के सारे रास्ते बंद हो गए तथा घर खर्च हेतु समस्यांएं बढ़ने लगी किसी के द्वारा मुझे एफपीओ (फार्मर प्रोड्यूसर आर्गेनाइजेशन) में मशरूम की खेती के प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त हुई फिर मेने एफपीओ (फार्मर प्रोड्यूसर आर्गेनाइजेशन) से मशरूम की खेती हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया जहां मुझे प्रशिक्षण के साथ-साथ कम्पोस्ट सहित बटन मशरूम उत्पादन की अन्य सामग्री भी मिली. मेने विशेषज्ञों की देखरेख में मशरूम की पैदावार का कार्य प्राम्भ किया आज में सफल तरीके से मशरूम की पैदावार कर रही हूं. इसमें मुझे काम खर्च पर अच्छा खासा मुनाफा मिल रहा है. और इसके अलावा मेरे ही जैसी कई महिलाओं को मशरूम खेती से जोड़कर उन्हें भी रोजगार दे रही हूं. पूजा देवी ने बताया कि वो लगभग 3 किलो मशरूम प्रतिदिन के हिसाब से पैदावार प्राप्त कर रही है बाजार में यह 150 से 200 रुपए किलो में बिक जाता है. इससे अपने परिवार की आर्थिक समस्यांएं दूर करने में सक्षम रही और अपने पति की आर्थिक रूप से काफी मदद की

मशरूम के उत्पादन से जुडी कुछ महत्यपूर्ण जानकारियां

पूजा ने बताया कि अगर कोई महिला मेरी तरह मशरूम की खेती घर बैठे करना चाहती है, तो एफपीओ से इसका प्रशिक्षण प्राप्त कर आगे बढ़ सकती है. मशरूम का उत्पादन तीन तरह से कर

प्रियंका जादौन[1], सोमदत्त त्रिपाठी[2] , अरविन्द कुमार सिंह [3], यशवंत गहलोत[4]

[1]कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग म.प्र. शासन

[2]शोध छात्र, कृषि प्रसार विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रोधोगिक विश्विद्यालय बाँदा

[3]सहअद्यापक, आइ .टी .यम. विश्वविद्यालय, ग्वालियर

[4]शोध छात्र, मृदा विज्ञानं एवं कृषि रसायन विभाग, आर वी अस के वी वी ग्वालियर

सकते है.

- ढिगरी मशरूम -सितम्बर महीने से 15 नवंबर तक ,
- बटन मशरूम -इसका उत्पादन आप फरवरी-मार्च तक ले सकते है
- मिल्की मशरूम जिसका उत्पादन जून-जुलाई तक चलता है.

इस तरह आप साल भर मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं.

मशरूम का उत्पादन कैसे करे ?

मशरूम की खेती का सबसे बड़ा फायदा तो ये है कि इसके लिए आपको मिट्टी की जरूरत नहीं, बल्कि प्लास्टिक के बड़े-बड़े बैगों, कंपोस्ट खाद, धान और गेहूं का भूसा इसे उगाने के लिए काफी है. अगर आप इसे उगाना चाहते हैं तो सबसे पहले छोटी जगह पर शेड़ लगाकर उसे लकड़ी और जाल से कवर कर के कर सकते हैं. हालांकि, इस बात का आपको खास ध्यान रखना होगा कि बीज डालने के 15 दिनों बाद तक शेड में हवा ना लगे. फिर बुआई के 15 दिन बाद शेड में पखें लगा दें और हवा का प्रवाह होने दें. इसके बाद 30-40 दिनों तक मशरूम की फसल को पकने दें.

वहीं अगर आप इसे घर में उगाना चाहते हैं तो इसे कोई भी व्यक्ति घर पर ही आसानी से कर सकता है. मशरूम की खेती करना काफी सरल है. इसके लिए दस किलो भूसे को 100 लीटर पानी में भिगोया जाता है. इसकी तैयारी के लिए 150 मिली फार्मलिन और सात ग्राम कार्बेन्डाज़िम को पानी में घोलकर इसमें दस किलो भूसा डूबोकर उसका शोधन किया जाता है. भूसा भिगोने के लगभग बारह घंटे बाद इसे निकाल लेते हैं. इसके बाद भूसे को किसी जालीदार बैग में भरकर या फिर चारपाई पर फैला देते हैं, जिससे अतिरिक्त पानी निकल जाता है. इसके बाद एक किलो सूखे भूसे को एक बैग में तीन लेयर में भरकर उसमें मशरूम लगा दिया जाता है.